

Paper- GS2
Subject- Polity

Model Answer

Que. Can the vicious cycle of gender inequality, poverty, and malnutrition be broken through micro financing of women SHGs? Explain with examples.

The interconnected challenges of **gender inequality, poverty, and malnutrition** form a vicious cycle, particularly affecting rural and marginalized communities. In such scenarios, **Self-Help Groups (SHGs)**, backed by microfinancing, have emerged as transformative platforms to empower women socially and economically, breaking this cycle and fostering sustainable development.

Understanding the Cycle

1. **Gender Inequality:** Women face limited access to education, resources, and decision-making, leading to economic dependency.
2. **Poverty:** Economic deprivation exacerbates poor living conditions and reduces access to essentials like food and healthcare.
3. **Malnutrition:** Poverty and lack of awareness often result in under nutrition, disproportionately affecting women and children.

Role of Microfinancing in Women SHGs

1. Economic Empowerment

- **Access to Credit:** SHGs provide small loans to women for starting businesses or engaging in income-generating activities.
- **Increased Income:** Women contribute to household finances, reducing poverty.
 - *Example:* Kudumbashree in Kerala has uplifted millions of women through micro-enterprises, reducing poverty rates in the state.

2. Social Empowerment

- **Decision-Making Power:** Financial independence strengthens women's voices in family and community decisions.
- **Education and Awareness:** SHGs promote literacy, health awareness, and gender equality.
- According to NABARD, SHG members in India have significantly higher literacy rates than non-members.

3. Improved Nutrition

- **Better Food Security:** Increased income allows families to afford nutritious food.
- **Health Awareness Campaigns:** Many SHGs conduct programs on nutrition and hygiene, improving overall health.
 - *Example:* Tamil Nadu SHGs promoting kitchen gardens have improved dietary diversity among members.

4. Breaking Cultural Barriers

- **Community Solidarity:** SHGs foster collective action, helping women overcome cultural and systemic barriers.
- SHG members in Rajasthan successfully fought against child marriage practices.

Micro financing women's SHGs is a powerful strategy to break the cycle of gender inequality, poverty, and malnutrition. By fostering financial independence, improving social status, and promoting better health and nutrition, SHGs can transform the lives of millions of women and their families.

प्र. क्या महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माइक्रोफाइनेंसिंग के माध्यम से लैंगिक असमानता, गरीबी और कुपोषण के दुष्चक्र को तोड़ा जा सकता है? उदाहरणों सहित समझाएं।

लैंगिक असमानता, निर्धनता और कुपोषण की चुनौतियां एक दुष्चक्र हैं, जो विशेष रूप से ग्रामीण और सीमान्त समुदायों को प्रभावित करती हैं। ऐसे परिदृश्य में, माइक्रोफाइनेंस द्वारा समर्थित स्वयं सहायता समूह (SHG) महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु परिवर्तनकारी मंच के रूप में उभरे हैं, जो इस चक्र को तोड़ते हैं और सतत विकास को बढ़ावा देते हैं।

चक्र को समझना

- **लैंगिक असमानता:** महिलाओं को शिक्षा, संसाधनों और निर्णयन की सीमित पहुँच का सामना करना पड़ता है, जिससे वे आर्थिक रूप से निर्भर रहती हैं।
- **निर्धनता:** आर्थिक अभाव से जीवन स्थिति बिगड़ती है और भोजन और स्वास्थ्य सेवा जैसी आवश्यक चीजों तक पहुँच कम होती है।
- **कुपोषण:** निर्धनता और जागरूकता की कमी के कारण कुपोषण होता है, जिसका महिलाओं और बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

महिला स्वयं सहायता समूहों में माइक्रोफाइनेंसिंग की भूमिका

1. आर्थिक सशक्तिकरण

- **ऋण तक पहुँच:** स्वयं सहायता समूह महिलाओं को व्यवसाय शुरू करने या आय-उत्पादक गतिविधियों में संलग्न होने के लिए छोटे ऋण प्रदान करते हैं।
- **आय में वृद्धि:** महिलाएँ घरेलू वित्त में योगदान देती हैं, जिससे गरीबी कम होती है।
- **उदाहरण:** केरल में कुदुम्बश्री ने सूक्ष्म उद्यमों के माध्यम से लाखों महिलाओं का उत्थान किया है, जिससे राज्य में गरीबी दर कम हुई है।

2. सामाजिक सशक्तिकरण

- **निर्णयन की शक्ति:** वित्तीय स्वतंत्रता परिवार और समुदाय के निर्णयों में महिलाओं की आवाज़ को मज़बूत बनाती है।
- **शिक्षा एवं जागरूकता:** SHG साक्षरता, स्वास्थ्य जागरूकता और लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं।
- **NABARD के अनुसार,** भारत में SHG सदस्यों की साक्षरता दर गैर-सदस्यों की तुलना में काफी अधिक है।

3. उन्नत पोषण

- **बेहतर खाद्य सुरक्षा:** आय में वृद्धि से परिवारों को पौष्टिक भोजन खरीदने में मदद मिलती है।
- **स्वास्थ्य जागरूकता अभियान:** कई SHG पोषण और स्वच्छता पर कार्यक्रम चलाते हैं, जिससे समग्र स्वास्थ्य में सुधार होता है।
- **उदाहरण:** रसोई उद्यानों को बढ़ावा देने वाले तमिलनाडु SHG ने सदस्यों के मध्य आहार विविधता में सुधार किया है।

4. सांस्कृतिक अवरोधों को तोड़ना

- **सामुदायिक एकलुटता:** स्वयं सहायता समूह सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा देते हैं, महिलाओं को सांस्कृतिक और प्रणालीगत बाधाओं को दूर करने में मदद करते हैं।
- **राजस्थान में स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने बाल विवाह प्रथाओं के खिलाफ सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी।**

महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के लिए सूक्ष्म वित्तपोषण लैंगिक असमानता, गरीबी और कुपोषण के चक्र को तोड़ने के लिए एक शक्तिशाली रणनीति है। वित्तीय स्वतंत्रता को बढ़ावा देकर, सामाजिक स्थिति में सुधार कर और बेहतर स्वास्थ्य और पोषण को बढ़ावा देकर, स्वयं सहायता समूह लाखों महिलाओं और उनके परिवारों के जीवन को बदल सकते हैं।

Paper- GS1
Subject- Geography

Model Answer

Que Counter-urbanisation is not a cause but rather an effect. Comment

Counter-urbanisation refers to the movement of people from urban areas to rural or semi-urban regions, reversing traditional urbanization trends. While often perceived as a cause of socio-economic and demographic shifts, it is more accurately understood as an effect driven by various underlying factors.

Why Counter-Urbanisation is an Effect

1. Urban Push Factors

- Overcrowding and Congestion: Urban areas often suffer from overpopulation, traffic congestion, and strained public services.
- High Cost of Living: Expensive housing, food, and amenities in cities push individuals to relocate to more affordable regions.

Example: The rising real estate prices in metropolitan cities like Mumbai and Bengaluru.

2. Rural Pull Factors

- Improved Infrastructure: Development of better roads, healthcare, and education facilities in rural areas attract urban dwellers.
- Quality of Life: Rural areas offer a quieter, greener, and less stressful environment.

Example: Satellite towns like Hosur (near Bengaluru) and Alwar (near Delhi) are witnessing a significant influx of urban migrants.

3. Technological Advancements

- Workplace Flexibility: The rise of remote work, especially post-COVID-19, has enabled people to move away from cities.
- Digital Connectivity: Internet penetration in rural areas facilitates access to education, healthcare, and employment opportunities.

4. Policy and Economic Drivers

- Decentralized Development: Government schemes promoting rural industrialization and smart cities encourage movement away from urban centers.

Example: India's Smart Cities Mission integrates rural-urban transition zones to decongest urban hubs.

Consequences of Counter-Urbanisation

Positive Impacts

- **Decongestion of Cities:** Reduces pressure on urban infrastructure.
- **Balanced Regional Development:** Promotes economic growth in semi-urban and rural areas.

Negative Impacts

- **Unplanned Urbanisation in Rural Areas:** Rapid influx into peri-urban regions may lead to haphazard development.
- **Stress on Rural Resources:** Increased population can overburden existing rural infrastructure.

Counter-urbanisation is predominantly an effect of socio-economic, technological, and environmental pressures in urban areas and opportunities in rural regions. While it offers solutions to urban challenges, it also necessitates planned and sustainable development in rural areas to accommodate the changing demographic patterns effectively.

प्रश्न: प्रति-शहरीकरण (Counter-urbanisation) एक कारण नहीं, बल्कि एक परिणाम है। टिप्पणी करें।

प्रति-शहरीकरण शहरी क्षेत्रों से ग्रामीण या अर्ध-शहरी क्षेत्रों में लोगों का स्थानांतरण है, जो पारंपरिक शहरीकरण के रुझानों को उलट देता है। इसे अक्सर सामाजिक-आर्थिक और जनसांख्यिकीय बदलावों के कारण माना जाता है, परन्तु इसे सटीक रूप से विभिन्न अंतर्निहित कारकों द्वारा संचालित प्रभाव के रूप में समझा जाता है।

प्रति-शहरीकरण परिणाम क्यों है?

1. शहरी प्रेरक कारक

- **भीड़भाड़:** शहरी इलाकों में अक्सर अधिक जनसंख्या, यातायात और तनावपूर्ण सार्वजनिक सेवाओं की समस्या होती है।
- **जीवन-यापन की उच्च लागत:** शहरों में महंगे आवास, भोजन और सुविधाएँ लोगों को अधिक किफायती क्षेत्रों में स्थानांतरित होने के लिए मजबूर करती हैं। उदाहरण: मुंबई और बेंगलुरु जैसे महानगरों में अचल संपत्ति की बढ़ती कीमतें।

2. ग्रामीण कारक

- **बेहतर अवसंरचना:** ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर सड़कें, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा सुविधाएँ शहरी निवासियों को आकर्षित करती हैं।
- **जीवन की गुणवत्ता:** ग्रामीण क्षेत्र शांत, हरियाली से भरपूर और कम तनावपूर्ण वातावरण प्रदान करते हैं।
- **उदाहरण:** होसुर (बेंगलुरु के पास) और अलवर (दिल्ली के पास) जैसे सैटेलाइट शहरों में शहरी प्रवासियों की महत्वपूर्ण आमद देखी जा रही है।

3. तकनीकी उन्नति

- **कार्यस्थल पर लचीलापन:** खास तौर पर कोविड-19 के बाद घर से काम करने के बढ़ते चलन ने लोगों को शहरों से दूर जाने में सक्षम बनाया है।
- **डिजिटल कनेक्टिविटी:** ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुंच शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के अवसरों तक पहुंच को आसान बनाती है।

4. नीति और आर्थिक संचालक

- **विकेंद्रीकृत विकास:** ग्रामीण औद्योगीकरण और स्मार्ट शहरों को बढ़ावा देने वाली सरकारी योजनाएँ शहरी केंद्रों से दूर जाने को प्रोत्साहित करती हैं।
- **उदाहरण:** भारत का स्मार्ट सिटीज़ मिशन शहरी केंद्रों में भीड़भाड़ कम करने के लिए ग्रामीण-शहरी संक्रमण क्षेत्रों को एकीकृत करता है।

प्रति-शहरीकरण के परिणाम

सकारात्मक प्रभाव

- शहरों में भीड़भाड़ कम करना: शहरी अवसंरचना पर दबाव कम करना।
- संतुलित क्षेत्रीय विकास: अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।

नकारात्मक प्रभाव

- ग्रामीण क्षेत्रों में अनियोजित शहरीकरण: शहरी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ते प्रवाह से अव्यवस्थित विकास हो सकता है।
 - ग्रामीण संसाधनों पर दबाव: बढ़ती आबादी मौजूदा ग्रामीण अवसंरचना पर बोझ डाल सकती है।
- प्रति-शहरीकरण मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक, तकनीकी और पर्यावरणीय दबावों और ग्रामीण क्षेत्रों में अवसरों का प्रभाव है। जबकि यह शहरी चुनौतियों का समाधान प्रदान करता है, यह बदलते जनसांख्यिकीय पैटर्न को प्रभावी ढंग से समायोजित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में योजनाबद्ध और सतत विकास की भी आवश्यकता है।